डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

सा.अ./

15 अगस्त 2017

प्रेस विज्ञप्ति

सामूहिक स्वतंत्रता में नागरिक स्वतंत्रता आवश्यक है
वक्ताओं ने 'मेरे लिए स्वतंत्रता का अर्थ' विषय पर व्यक्त किए विचार

नई दिल्ली, 15 अगस्त, 2017 । साहित्य अकादेमी द्वारा स्वतंत्रता दिवस की 71वीं वर्षगाँठ के विशेष अवसर पर 'मेरे लिए स्वतंत्रता का अर्थ' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन साहित्य अकादेमी के सभाकक्ष में किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न अनुशासनों के विद्वानों तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों ने सहभागिता की।

इस परिसंवाद के प्रारंभ होने से पूर्व हिंदी के प्रख्यात कवि चंद्रकांत देवताले के निधन पर मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

अतिथि विद्वान वक्ताओं का स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने कहा कि हमें इस विषय पर बेहद सचेत होने की आवश्यकता है कि स्वतंत्रता का हमारे लिए क्या औचित्य है और इसका हम सही तरीके से कैसे उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि आजादी के इतने वर्ष बाद भी हम कई बार अपनी स्वतंत्रता का विभ्रम में उपयोग करते हैं और इसके दुष्परिणाम भी हमें झेलने पड़ते हैं। न सिर्फ हमें बल्कि समाज, देश को भी दुष्परिणामों को झेलना पड़ जाता है इसलिए इस विषय पर हमें विशेष रूप से जानने समझने की आवश्यकता है।

अभय कुमार दुबे ने कहा कि हम विभिन्न विचारधाराओं के दबाव में अपनी निजी चिंतन की पद्धति खो देते हैं। इसलिए स्वतंत्र चिंतन हेतु स्वतंत्रता का अर्थ है और इसके लिए मैं तयशुदा चिंतन पद्धति से स्वतंत्र चिंतन की माँग करता हूँ। उन्होंने अभिव्यक्त की स्वतंत्रता और उस पर विभिन्न बंदिशों का जिक्र किया और कहा कि वैचारिक गुलामी उचित नहीं है।

अनंत विजय ने समान अवसर पर आधारित स्वतंत्रता की वकालत करते हुए कहा कि प्रत्येक सरकार को इसके लिए विशेष तौर पर संवेदनशील होना चाहिए।

. . . 2/–

असगर वजाहत ने साहित्य के हवाले से आप बीती और पर बीती का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि रचनाकार की अभिव्यक्ति रचनाशीलता के दायरे में ही रहनी चाहिए।

गीतांजलि श्री ने चिंतन की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को स्पष्ट किया।

केकी एन. दारूवाला ने कानून तथा लोकतंत्र के हवाले से लेखन में अभिव्यक्ति की कवायद की और इस संबंध में न्यायपालिका को सहानुभूति पूर्वक विचार करने की सलाह दी।

लीलाधर मंडलोई ने कहा कि स्वतंत्रता को प्रत्येक नागरिक की दृष्टि से देखना चाहिए। उन्होंने कहा कि आजादी की सही परिभाषा सामूहिक स्वतंत्रता में ही है इसे व्यक्तिगत या निजी संदर्भों में देखना उचित नहीं होगा।

मालन वी. नारायण ने स्वतंत्रता की विविधता में विश्वास प्रकट करते हुए कि उसे कहीं से भी एक रंगी नहीं होना चाहिए।

नलिनी ने कहा कि विभिन्न कलाएँ भी आपस में सामूहिक स्वतंत्रता की वकालत करती है।

प्रयाग शुक्ल ने कि स्वतंत्रता का हमेशा खतरा सत्ता पक्ष से ही होता है। अतः इस मामले में सत्ता पक्ष को बेहद कार्य सतर्कता के साथ काम करने की आवश्यकता है।

शरण कुमार लिंबाले एवं श्यौराज सिंह बेचैन ने कहा कि वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाने के बाद ही असली स्वतंत्रता प्राप्त हो सकती है। उन्होंने समाज की मुख्यधारा को भी अपने वक्तव्य में स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि जहाँ भी शोषण और असमानता होती है वहाँ स्वतंत्रता और समरसता नहीं होती।

चित्रा मुद्गल ने कहा कि मेरे लिए स्वतंत्रता का मतलब सामूहिक स्वतंत्रता में अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करना है। मैं अपनी स्वतंत्रता को किसी अन्य की स्वतंत्रता के विरोध में नहीं साबित नहीं कर सकती। मेरा चिंतन और लेखन सामूहिक स्वतंत्रता में प्रत्येक नागरिक की स्वतंत्रता की वकालत करने का प्रयास करता है।

कार्यक्रम के अंत में श्रोताओं ने वक्ताओं से सवाल पूछे जिनका विद्वानों ने उचित उत्तर दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, पत्रकार, बुद्धिजीवी एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्य अधिकारी देवेश कुमार देवेश ने किया।

(के. श्रीनिवास राव)